अजित फाउंडेशन द्वारा प्रकाशित
बाल पत्रिका

वर्ष 5 | अंक - 10 | माह - जून 2025

चहल पहल

अनुक्रमणिका

संपादकीय 3

कहानियां

मनन का मन	हरीशचन्द्र पाण्डे	4
वृक्षों की पीड़ा	सुनील कुमार	6
नम्रता	संदीप पाण्डे	11
सही मार्ग	पूनम पाण्डे	13
फार्म हाउस	अर्चना त्यागी	22

कविताएं

चिंटू चला बाजार	सुमन मीना	07
वर्षा की ऋतु...	डॉ. सुधा गुप्ता	08
मेंढ़क	नरेश चन्द्र	08
पेड़ उगाकर	सरिता पुरोहित	09
कौवा	डॉ. सतीश 'बब्बा'	09
बोधि की चुप्पी	डॉ. सत्यवान	10
मौसमी फल....	डॉ. मीरा	12
कोयल	टीकेश्वर सिन्हा	12
वृक्षों का संसार	डॉ. राकेश चक्र	13

विविध

बच्चों का कोना	15 से 17	
बाल पहेलियां	नमिता वैश्य	14
भूल–भूलैया	चांद मोहम्मद घोसी	18
दुनियां के देश	संजय पुरोहित	19
जाने आकाश के.....	संजय श्रीमाली	25

अजित फाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित

संपादक - संजय श्रीमाली

जून 2025

आप अपनी रचनाएं इस ईमेल पते पर भेजे
chahalpahalnew@gmail.com

मुख्य आवरण पृष्ठ चित्रकार कमल अग्रवाल, नोहर ने बनाया तथा आवरण पृष्ठ अंकित चित्र रूपिशा अग्रवाल द्वारा बनाया गया है।

संपादकीय

छुट्टियों का सद्पयोग करें

प्यारे बच्चों

गर्मी की छुट्टियां आरम्भ हो गई है। इस पूरे महिने आपकी छुट्टियां रहेगी। तो, पढ़ाई से एक बार निजात मिल गई। अब इन छुट्टियों का कैसे सद्पयोग किया जाए उसके बारे में सोचना चाहिए। खेलना, खाना-पीना, घूमना, नई-नई जगहों पर जाना उनके बारे में जानना, रूचि क्लासों में कुछ नया सीखना आदि कई तरीके हो सकते है इन छुट्टियों में अपने समय का सद्पयोग करने हेतु। लेकिन इन सब के साथ-साथ जो मैं यहां कह रहा हूं उसको भी ध्यान में रखना चाहिए। आपको अपने परिवार के सदस्यों के साथ बैठकर बातें जरूर करनी चाहिए। क्योंकि मोबाईल ने आपसी मेलजोल को काफी हद तक कम कर दिया हैं। आपको दादा-दादी, नाना-नानी या अन्य परिवारजन के साथ बैठकर हंसी ठिठौली की बातें करनी चाहिए। इससे बुजुर्गों के अनुभवों का आपको लाभ मिलेगा तथा उनकी एकात्मकता कई हद तक कम होगी।

आप प्रातः आस-पास किसी पार्क में जाकर व्यायाम एवं ताजा हवा का आनन्द ले सकते हैं। तेज धूप में घर से बाहर न निकलकर घर के अन्दर रोचक खेल खेले। गर्मी के अनुकूल ही खान-पान करें। कहानियां-कविताओं की पुस्तकें पढ़कर अपनी रचनात्मकता एवं वाकपटुता को बढ़ा सकते है।

एक बात का और ध्यान रखे आप अपने घरों में इन गर्मियों में पौधे जरूर लगावें तथा उनकी देखभाल भी करें। इससे तरह-तरह के पक्षी इन पौधों के पास आएंगे उनकी आवाज सुनकर आपको अच्छा लगेगा तथा प्राकृतिक वातावरण तैयार होगा। पक्षियों के लिए दाना एवं पानी की व्यवस्था भी करें। इस गर्मी में हमें अपने साथ-साथ उनका भी ध्यान रखना चाहिए।

संजय श्रीमाली

मनन का मन

हरीशचंद्र पांडे

मनन मुम्बई से अल्मोड़ा आ गया था। मनन अकेला नहीं आया था। उसके साथ माता–पिता थे। चालक अंकल थे। वह सभी एक कार में बैठकर आये थे। मनन जब कार से उतरा तो खूब ठंडी हवा उससे होकर गुजरी। उसको यह कुदरती शीतलता बहुत भा गयी थी। उसने अपने गालों को स्पर्श किया। मां और पापा से बोला देखो ना मेरे चेहरे पर जैसे बर्फ लग गई है।

मां और पापा हंस पड़े। सात साल का मनन आज पहली बार अल्मोड़ा आया था। पिछले साल वह स्कूल के टूर पर कुर्ग गया था। उससे पहले उटी। हिमालय के पहाड़ों को उसने आज ही अपने सामने देखा। इससे पहले पाठशाला की पाठ्य पुस्तक में देखा था। टेलिविजन में देखा था।

चित्र : सुधा पुराहित

मनन के हाथों में ढेर सारी चाकलेट थी। तभी उसके बगल से दो बालक होकर गुजरे। मां ने कहा मनन इनको चाकलेट दे दो। मगर मनन ने लालच में आकर टाल दिया। फिर मां ने अपने पर्स से चाकलेट निकाल कर उन दोनों बच्चों को दे दी। उनके गुलाबी गाल खिल उठे। वह बच्चे कुछ कदम चलकर अपनी मां के आंचल में छिप गये। उनकी मां एक टोकरे में खुबानी, अलूबुखारा आदि बेच रही थी।

मनन ने चारों ओर गरदन घुमाई। पहाड ही पहाड़ थे। चीड के, देवदार के हरे भरे वृक्ष थे। दूर से झरने के पानी की आवाज आ रही थी एक नीलकंठ पक्षी भी उनके पास से उड़कर गया। मगर एकदम दूर चला गया। बादल का एक टुकड़ा उनके ऊपर से होकर

गुजरा। ओह, बादल वह देखो वह देखो मनन खुशी से चीख रहा था। चाकलेट खा रहे वह बालक गौर से मनन को देख रहे थे। कुछ कदम दूर एक गेस्ट हाउस था। मनन और उसके माता–पिता गेस्ट हाउस में चले गये। वहां उन तीनो ने कुछ देर आराम किया। मनन ने खिड़की से झाँक कर बाहर देखा। हर तरफ खिलता हुआ हरा रंग था। हरा भरा देखकर मनन को खूब ताजगी मिल रही थी।

दोपहर को वह सभी घूमने गये। आज वह लोग अल्मोड़ा का बाजार घूम रहे थे। मनन ने ताजा–ताजा बाल मिठाई खाई। उसे कप केक से भी अधिक स्वादिष्ट लगी। समोसे भी खाये। इतना जायकेदार समोसा उन तीनों ने शायद पहली बार ही खाया था। अब हौले– हौले अंधेरा हो रहा था। वह लोग वापस गेस्ट हाउस लौटकर आ गये। अगले दिन मनन की नींद जरा जल्दी ही खुल गई। माता–पिता को गहरी नींद आ रही थी। दरअसल माता–पिता के दफ्तर की गूगल मीट हो रही थी। दोनों ने देर रात तक रिपोर्ट तैयार की थी। मगर मनन की तो नींद पूरी हो चुकी थी। वह कमरे के बाहर आ गया था। गेस्ट हाउस के बाहर सड़क पर आकर उसे मजा आने लगा। तभी दो विशाल और काले लंगूर उसे लपकने को आये। मनन को इसका कुछ पता न था। लंगूर से डरकर वह भागने लगा और ठोकर खाकर गिर गया। तभी उसे उन दोनों बालकों ने संभाल लिया। उनके हाथों में मोटा डंडा था। डंडा मारने की भी जरूरत नहीं पड़ी। लंगूर भाग गये थे। मनन तो अब तक डरकर कांप रहा था। माता पिता उसे खोजते हुए बाहर आ गये थे। मनन को सुरक्षित देखकर उनकी जान में जान आई। मनन ने उनको बताया कि, वह अभी अभी लंगूर के चंगुल से बचा। उसको बचाया इन दोनों हीरोज ने। इनके नाम हैं गोगी और सामा। मनन ने जोश में बताया। माता–पिता ने उन दोनों का धन्यवाद किया। अब वह तीनों नाश्ता करने वापस गेस्ट हाउस चले गये थे। दो दिन अल्मोडा के कुदरती सौदर्य का आनंद लेकर माता–पिता और मनन वापस जा रहे थे। जाने से पहले मनन उन दोनों से मिलने गया। गोगी और सामा को ढेर सारी चाकलेट देकर मनन ने उनसे हाथ मिलाया। मनन ने उनसे कहा कि, अपना ख्याल रखना। अगली छुट्टी में फिर आऊंगा। चार पहिया कार सरपट चलती हुई उनकी आखों से ओझल हो गई थी। गोगी और सामा अपनी नम आखों से हाथ हिलाकर विदा दे रहे थे। और मनन भी तो उनको कभी न भूलने वाला था।

पता – कुसुमखेड़ा, हल्दवानी, उत्तराखण्ड

वृक्षों की पीड़ा

सुनील कुमार माथुर

पेड़–पौधे बड़े ही सुन्दर और दयालु प्रवृत्ति के होते हैं जो इंसानों को ही नहीं जीव जन्तुओं को भी प्राकृतिक हवा, फल–फूल व जीवन रक्षक आक्सीजन प्रदान करते हैं। ठंडी–ठंडी छांव देते हैं। हरियाली देते हैं और उनकी शरण में जाने वाले हर जीव–जन्तुओं व राहगीरों को वे शीतलता प्रदान करते है। पक्षियों व जंगली जानवरों को रहने के लिए स्थान देते है।

उनकी शरण में आने वालें हर किसी को उन्होंने सर्दी, गर्मी और वर्षा से रक्षा की। वृक्षों ने अपनी पीड़ा सुनाते हुए बताया कि हम जब वृद्ध हो जाते है अर्थात् सूख जाते है तो हमारी लकड़ियां जलाने के काम आई। हमने अपने जीवन के अंत समय तक मानव जाति की सेवा की, लेकिन बदलें में हमें क्या मिला।

चित्र : गुंजन शर्मा

विकास के नाम पर हरे भरे वृक्षों को काट डाले गए। जंगल के जंगल उजाड़ दिए। यहां तक कि मानव ने सुनियोजित षड़यंत्र कर जंगलों में आग लगा दी और सारे वृक्षों को जलाकर बड़ी बड़ी हवेलियां, होटलें, महल व इमारतें खड़ी कर ली। पक्षियों व जानवरों के रहने की जगह छीन ली, नतीजन आज वे दर दर भटक रहे हैं।

इंसान भले ही हरे–भरे वृक्षों को विकास के नाम पर काट ले, लेकिन फिर भी वह कभी सुखी व संतुष्ट नहीं रहेगा। उसके पंखें, कूलर, ए.सी. सभी उसे बीमार कर देगे। वह जीवन भर बिमारियों से परेशान रहेगा। यह इन हरे–भरे वृक्षों की चीत्कार है। इंसान हर दिन गर्मी के मौसम में छाया व ठंडी–ठंडी प्रकृति की हवा को तरसेगा। प्रकृति के सौंदर्य को

देखने के लिए, शुद्ध हवा, आक्सीजन, प्राकृतिक फल–फूल, सब्जियों, भीनी–भीनी सुगंध को तरसेगा वह विकास के नाम पर विनाश के मार्ग पर चल रहा हैं।

हे इंसान ! अब भी वक्त है। हर वर्ष कम से कम पांच वृक्ष अवश्य लगाएं और उनकी तब तक देखरेख करे जब तक वे पनप न जाये, वे फल–फूल देने लायक युवा न हो जाये। चूंकि हरे भरे वृक्ष है तभी ठंडी–ठंडी छांव, प्राकृतिक हवा, स्वादिष्ट फल फूल, सब्जियां व आक्सीजन का भंडार है। हर घर, हर गली, हर सड़क के किनारे हरे भरे वृक्ष हो तभी वे हरा भरा पार्क बन पायेंगे। वरना ये आग उगलती धूप व गर्मी हैं। प्रकृति को कोसने से कोई लाभ नहीं हैं।

वृक्ष हमारी आस्था के प्रतीक हैं। वे लोक विश्वास व सांस्कृतिक विरासत के प्रतीक हैं। बरगद व पीपल के वृक्ष तो भारत में पूजे जाते हैं इसलिए वृक्षारोपण कीजिए और देश को फिर से हरा भरा बनाइये। चूंकि यह वृक्ष ही धरती के आभूषण (श्रृंगार) है। इनकी रक्षा करना हमारा नैतिक धर्म हैं ।

पता – 39/4 पी डब्ल्यू डी कालोनी, जोधपुर

चिंटू चला बाज़ार

सुमन मीना 'अदिति'

चित्र : दिव्यांशी

चिंटू बोला नानी से
सुन लो आके मेरी बात
आज चलूंगा मैं भी संग
सब्जी लेने को बाजार

हाथ नानी मैं आपका
कस कर पकड़े रखूंगा
धीरे धीरे कदम बढ़ाऊंगा
भीड़ में नहीं खोऊंगा

सब्जी में बाज़ार से
आलू, टमाटर, पालक
और गोभी लेकर आएंगे
सलाद के लिए खीरा,
प्याज और गाजर
खरीदकर दोनों लाएंगे

सब्जी लेने के बाद में
चाट पकौड़ी खाएंगे
खिलौने वाले के ठेले से
चाबी से चलती गाड़ी को
मेरे लिए हम खरीदेंगे

घर आकर बाज़ार से
स्वादिष्ट खाना बनाएंगे
और खूब मज़े से फिर
मिलकर सब संग खाएंगे।

पता –नजफगढ़, दिल्ली

वर्षा की ऋतु बड़ी सुहानी

डॉ सुधा गुप्ता अमृता

चित्र – चेतना

वर्षा की ऋतु बड़ी सुहानी
बादल बरसाता है पानी
बूंदे छम छम बरस बरस कर
गुपचुप गुपचुप कहानी

थी उदास जो धरती अब तक
देख हुई खुश टपर टपर टप
बातें करती फसलें हँसकर
लगा झूमने खुश हो हलधर
लहराता नदियों में पानी

लगे उछलने मेंढक टर टर
मुन्नू भीगे उछल–उछलकर
चुन्नू ने एक नाव बनाई
भरी तलैया में तेराई
सयानी नानी कहे कहानी

टप टप टप मेघा बरसे
खूब नहाने को मन तरसे
तड़ तड़ातड़ बिजली चमके
गड़ गड़ागड़ बादल गरजे
वर्षा करती है मनमानी
वर्षा की ऋतु बड़ी सुहानी

पता – कटनी, मध्य प्रदेश

मेंढक

नरेश चन्द्र उनियाल

चित्र – राम भादाणी

मैं मेंढक टर–टर करता हूँ,
मैं जल और थल में रहता हूँ,
नदियों पोखर तालाबों में,
अकसर मैं पाया जाता हूँ।

ताप जहां जैसा रहता है,
मेरा भी घटता बढ़ता है,
दो फुट मिट्टी के भी नीचे,
बड़ी मौज से मैं रहता हूँ।

पता– पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

पेड़ उगाकर करें उपकार

सरिता पुरोहित

चित्र – धीरज कच्छावा

पेड़ है धरती मां की शान,
इनका न करें कभी विनाश।

पेड़ हमें देते शीतल छाया,
अपनी फैलाकर विशाल काया।

धूप, वर्षा, में भी रहते खड़े,
मजबूत जड़ों में रहते अड़े।

पेड़ के फल प्राणी खाया करते,
इनकी छाया नीचे सोया करते।

पेड़ ऑक्सीजन प्राण वायु देते
इनके दम पर सभी प्राणी जीते।

आओ मिल जुल कर संकल्प करें,
न कभी इनकी विनाश करें।

पेड़ करते है धरती का श्रृंगार,
पेड़ उगाकर जरूर करें उपकार।

पता – जैतारण चौकी, मेड़ता सिटी

कौवा

डॉ. सतीश 'बब्बा'

चित्र – निकुंज व्यास

बहुत दिनों के बाद,
मुंडेर पे कौवा आया है,
संग में यह कैसे हुआ,
नहीं कोई साथी लाया है!

यह भूरे रंग का है,
पहले जैसा नहीं है,
यह कम बोलता है,
जोड़े को भूल आया है!

पहले काले कौवा आते,
ऊधम थे बहुत मचाते,
काकभुशुण्डि के प्रजाति,
थे वह कहलाते!

एक को काना कौवा कहते,
जयंत उसे थे कहते,
एक को संदेश वाहक कहते,
यमराज की सवारी कहते!

जाने कौवा कहां गए,
पर्यावरण बिगाड़ गए,
कितने पक्षी खो गए,
विकास नदी में डूब गए!!

पता – पोस्ट : कोबरा,
चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

बोधि की चुप्पी

डॉ. सत्यवान सौरभ

शांत है लुंबिनी की पगडंडी,
जहाँ फूलों ने पहले देखा प्रकाश,
राजकुमार की पहली हँसी में,
छुपा था अनंत का एक उलझा प्रकाश।
जन्मा था एक प्रश्न वहाँ,
चक्रवर्ती नहीं, चौतन्य का दीपक,
महलों की आभा से दूर,
सत्य का नन्हा एक दीपक।
बोधिवृक्ष के पत्तों में,
बहती है अनहद की बयार,
तप की चुप्पी, सत्य की पुकार,
जिसने अंधेरों को सीखा दिया,
प्रकाश का अनादि व्यापार।
कपिलवस्तु की गलियों में,
गूँजता है अब भी वो प्रश्न,
जीवन का सत्य क्या है?
दुख की गाँठें क्यों हैं?
महापरिनिर्वाण की शांति,
कुशीनगर की माटी में बसी,
जहाँ देह नहीं, पर जीवन का अर्थ,
साँसों में घुली एक अनंत हँसी।
साक्षी है ये धरती,
हर बोधि की फुसफुसाहट का,
जहाँ मौन से फूटा था अमरत्व,
और जाग उठा था एक विश्व का सत्य।

चित्र – यशिता आचार्य

चित्र : स्तुति बिस्सा

पता – 333, परी वाटिका, कौशल्या भवन, बड़वा (सिवानी) भिवानी, हरियाणा

नम्रता

संदीप पांडे 'शिष्य'

बार–बार नीचे आती हुई अपनी डाली को हवा की मदद से कुछ ऊपर की ओर करता हुआ वृक्ष संतुलन की जद्दोजहद में उलझा था। तभी अचानक हवा और माटी दोनों ने हंसकर तथा उत्सुक होकर पूछा, 'अब तो पतझड के बहाने हमारा जमीन पर मिलन होना ही है, फिर तू माटी होने से बच नहीं सकता! तुझे यह स्वीकार करना ही होगा।' वृक्ष ने यह सुना तो किलककर कहा, 'न तो मैं तुझसे डरता हूं और न तुम्हारी चेतावनी से भयभीत हूं, मैं तो इस सौधी माटी से मिलन के लिए कब से पलकें बिछाये बैठा हूं। मेरे झुकने का उद्देश्य तेरी नजरों से बचने का कदापि नहीं है। मेरी यह डाली तो झुक रही है। इस बगीचे में आने जाने वाली जनता से लिये हुए अपार स्नेह भार से। मुझे हमेशा यह ध्यान रहता है कि इस जगत से मैंने जितना लिया उसका एक अंश भी नहीं चुका पाया। सबने मुझे पिता कहकर मान दिया। पंछी तितली भौरे गिलहरी गिरगिट सर्प मधुमक्खी तक ने मुझे आश्रयदाता मानकर मेरा आभार और धन्यवाद किया। जबकि उनके होने से मैं समृद्ध हुआ। वह न आते तो मैं एकाकी था। फल खाने वाले मुझे प्रणाम तक करते मै शर्म से पानी–पानी हो जाता। सोचो अगर लोग मेरे फल न चखते तो मेरी पहचान ही कैसे बनती। मै तो उन सबका तहेदिल से अहसानमंद हूँ। बस यही बात है कि उन सबका यही प्यार मुझे विचलित कर रहा। मैं सचमुच उतना न लौटा पाया जितना मुझे हर रोज मिला। अतः मेरी डाली उस कर्ज से और मीठे फल तक उसी शर्म से झुके रहते हैं।' यह सुनकर हवा और माटी भाव विभोर हो गई। वृक्ष की नम्रता ने उनको गदगद कर दिया था।

चित्र – काव्या पटेल

पता –पुष्कर रोड, कोटडा, अजमेर

मौसमी फल खाओ

डॉ मीरा सिंह 'मीरा'

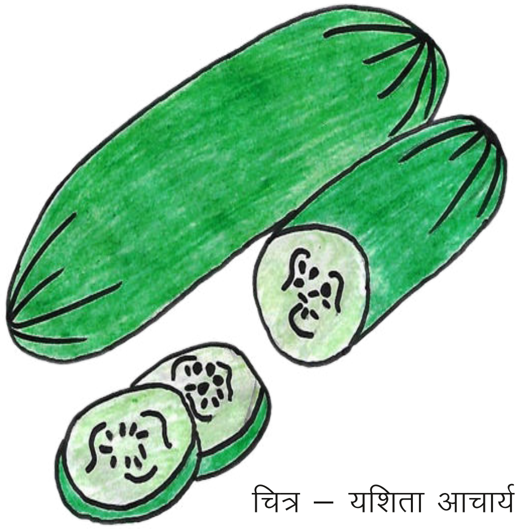

चित्र – यशिता आचार्य

गर्मी रानी हमें सताती
तरबूजे कुछ लाओ जी।
दादा करते बहुत बड़ाई
खाकर प्यास बुझाओ जी।।

खीरा–ककड़ी फल गर्मी के
लेकर घर में आओ जी।
हाल बुरा जालिम गरमी से
राहत कुछ पहुँचाओ जी।

फल के राजा आम रसीले
मिलकर झटपट खाओ जी।
गर्मी रानी आँख दिखाती
गर्मी दूर भगाओ जी।।

मीठी लीची हँसकर बोली
बच्चों खुश हो जाओ जी।
कितने सारे फल गर्मी में
खाकर अब मुसकाओ जी।।

पता – डुमराँव, जिला –बक्सर,
बिहार

कोयल

टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'

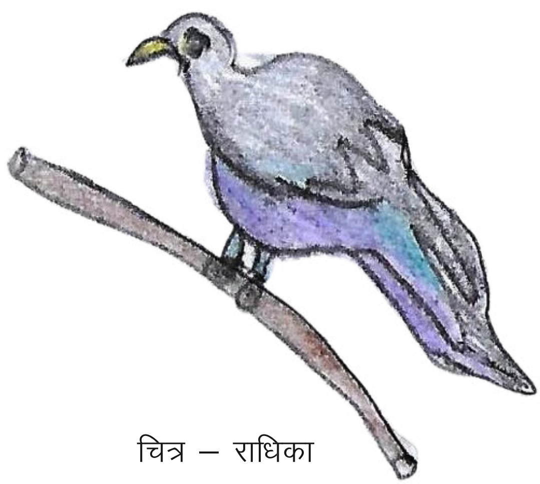

चित्र – राधिका

कुहुक–कुहुक करती कोयल।
डाल–डाल पर फुदकती कोयल।

रसीले आम का स्वाद लेकर,
मस्त बढ़िया मटकती कोयल।

सबको मीठी तान सुनाकर,
सुंदर परी सी लगती कोयल।

दुश्मनों की आहट पाकर,
पत्तियों में दुबकती कोय।

हम बच्चों की सहेली बनकर,
नन्ही बच्ची सी कुलकती कोयल।

कुहुक–कुहुक करती कोयल।
डाल–डाल पर फुदकती कोयल।

छत्तीसगढ़

वृक्षों का संसार

डॉ राकेश चक्र

पेड़ों का संसार अनोखा,
प्रेरक बन मुस्काते हैं।
जिज्ञासु मन विस्मित होता,
इनसे जीवन पाते हैं।।

इक पेड़ की यात्रा अदभुत,
खा जाता यह उड़ती धूल।
दूषित वायु बीस टन पीता,
सात सौ किलो निकाले फूल।।

तापमान को कम हैं करते
अपना प्रेम लुटाते हैं।
वृक्षों का संसार है अद्‌भुत
प्रेरक बन मुस्काते हैं।।

पेड़ों का जो करें संरक्षण
पौधे नए लगाते हैं।
वही सृष्टि के सच्चे सेवक
जीवन सफल बनाते हैं।

वृक्षों–सा जो देना सीखें,
सदा खुशी वह पाते हैं।
वृक्षों का संसार है अद्‌भुत,
प्रेरक बन मुस्काते हैं।।

चित्र – अंकित जावा

पता –90 बी, शिवपुरी
मुरादाबाद, उ.प्र

लघु कथा

सही मार्ग

पूनम पांडे

एक बार मजबूर और परेशान अभिभावक अपने मंद बुद्धि बालक को लेकर बुद्ध की शरण में आये बुद्ध ने उनको ज्ञान दिया कि, 'हार मत मानो' कोई भी जन्म से बुद्धिमान नहीं होता, ज्ञान अपने प्रयासों से माहौल से ही प्राप्त होता है। लेकिन हम दोनों अकेले ही इस जगत में इसको किस तरह विचारवान, विवेकवान बना सकेंगे ? उनका अगला प्रश्न था। बुद्ध ने कहा कि, कभी ये मत सोचिए कि आप अकेले हो, बल्कि ये सोचिए कि आप अकेले ही काफी हो। मगर, हमारे आस–पास रहने वाले मन ही मन हंसते हैं हम पर। जगहंसाई से घबराकर अपने कर्तव्य और लक्ष्य को कभी ना छोड़ें क्योंकि आपका लक्ष्य मिलते ही हंसने तथा मजाक करने वालों की राय ही बदल जाती है। इस बुद्ध ने तो उनको मार्ग ही बता दिया था। वह अभिभावक रोते हुए आये थे। हंसते–हंसते आत्मविश्वासी बनकर लौटे।

पता – पुष्कर रोड, अजमेर

बाल पहेलियां

नमिता वैश्य

1

मैं छोटा सा जीव
अनोखा
तारों जैसा टिम–टिम करता
कहते मुझको फायरफ्लाई
मेरा नाम बताओ
भाई।

2

सबसे छोटा प्राणी हूं
मैं
पंक्ति बनाकर चलना जानूं
कितनी ताकतवर हूं सोचो
हाथी को भी कुछ न
मानूं।

उत्तर

1–जुगनू
2– चींटी
3–तितली
4–मधुमक्खी

3

रंग–बिरंगे पर
फैलाकर
फूल–फूल पर हूं मंडराती
ज्यों ही मुझको छूना चाहो
झट से दूर गगन
उड़ जाती।

4

फूलों का मकरंद चुराएं
उनसे पौष्टिक शहद बनाएं
मिलजुल कर ये हरदम रहतीं
आएं कितनी ही
बाधाएं।

पता – मसकनवा
गोण्डा, उत्तर प्रदेश

बच्चों का कोना

दक्ष आचार्य, बीकानेर

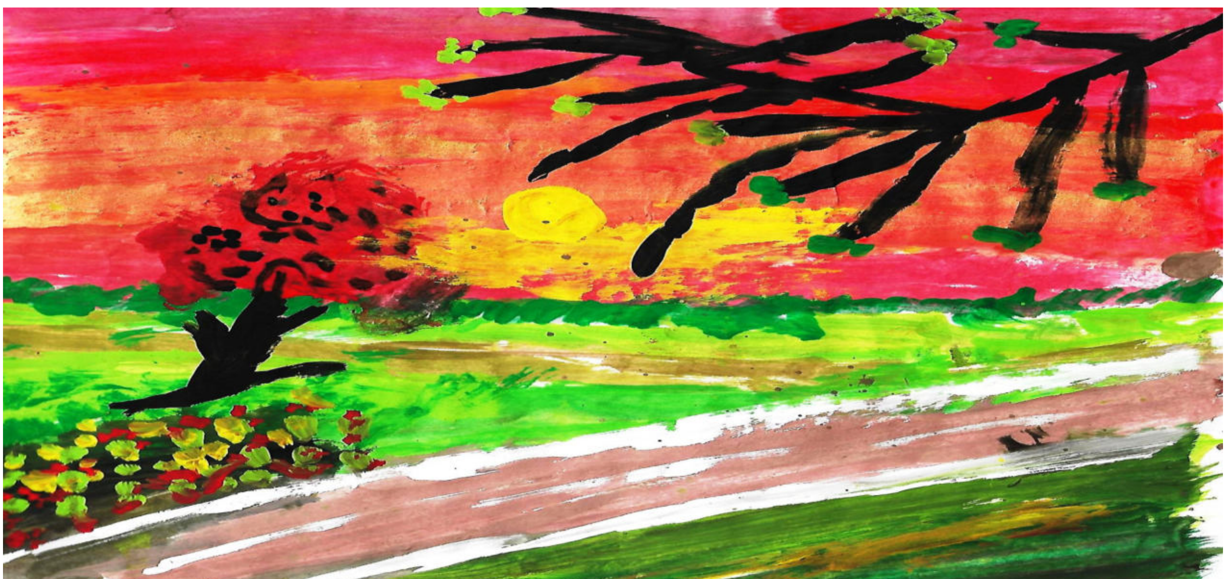

गगन शर्मा

दिव्यांशी, बीकानेर

राधिका तिवाड़ी, जोधपुर

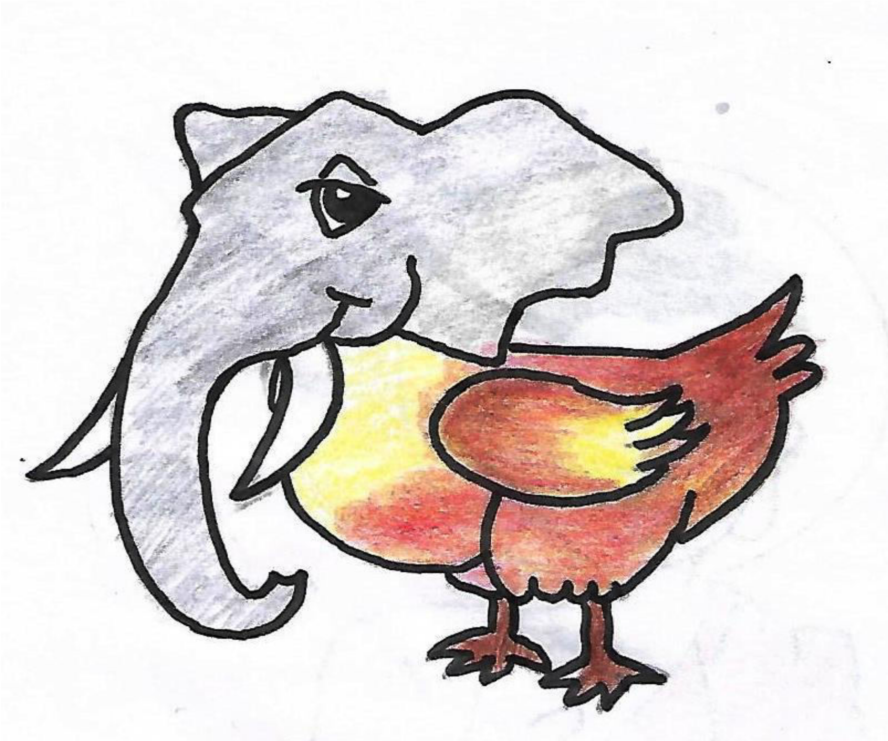

यशिता आचार्य, बीकानेर

अयाना ओमार, गुजरात

मोहित सरावगी, रतनगढ़

भूल-भूलैया

चांद मोहम्मद घोसी

बताओं इस काल्पनिक पक्षी का मुंह, धड़, पूंछ और पैर किस पक्षी से मिलते हैं।

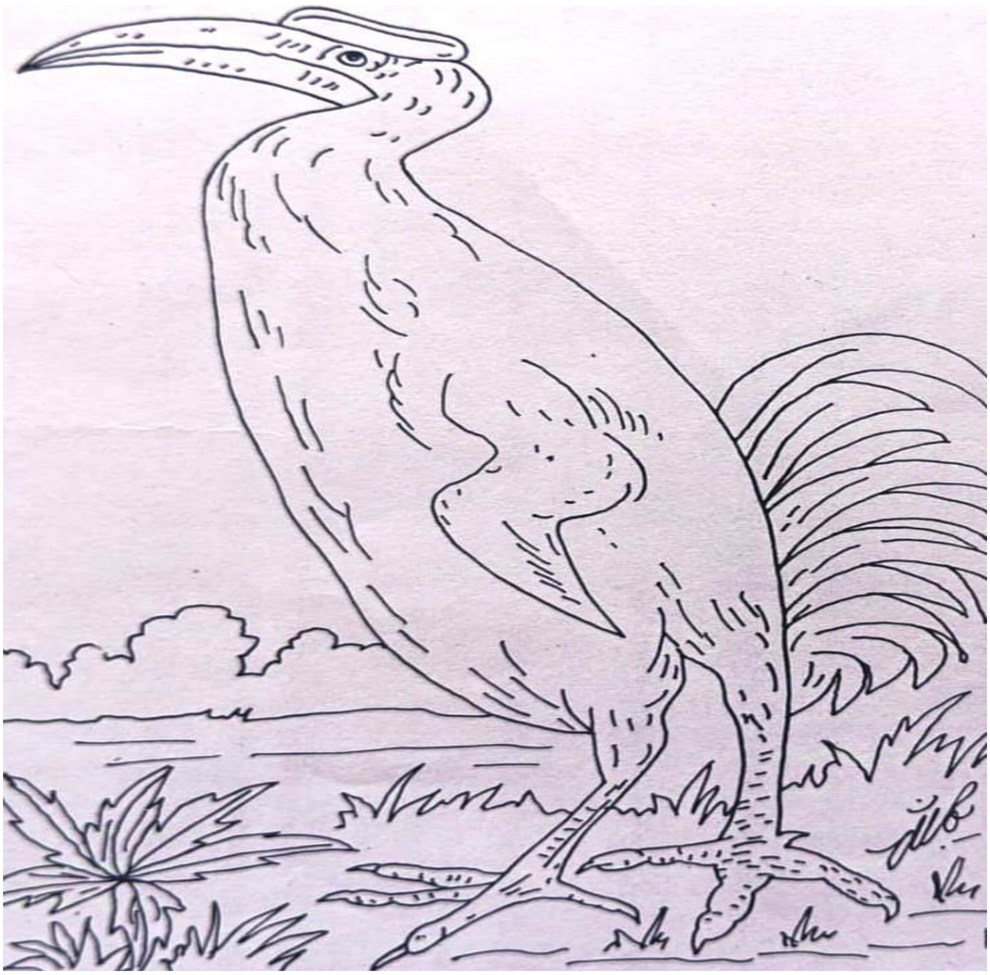

मुंह धनेष का, धड़ पेग्विन का, पूंछ मुरगे की और पैर मोर के

पता – नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी

दुनिया के देश

क्यूबा

संजय पुरोहित

हेलो फ्रेण्ड्स। कैसे हैं आप ? गर्मी की छुट्टियां आने वाली है। कुछ फ्रेण्ड्स तो छुट्टियां मना भी रहे हैं। छुट्टियों में जमकर मौज मस्ती करनी है। लेकिन साथ ही साथ भारत के बेस्ट सिटिजन बनने का संकल्प भी करना है। अपने एरिया को स्वच्छ रखें। आसपास कोई पौधा हो, पेड़ हो तो उसे पानी दें। पक्षियों के लिये गर्मी में पानी की व्यवस्था के परिंडे लगाने का काम अपने दोस्तों के साथ मिल कर कर सकते हैं। इस तरह आप अपनी सोशल जिम्मेदारी भी पूरी कर सकते हैं। करेंगे ना ये सब ? येस !

तो दोस्तों आज आपको लिये चलते हैं एक अनोखे देश की सैर पर। ये देश है क्यूबा। क्यूबा कैरेबियन–सी में स्थित एक द्वीप देश है। यह एक सोशलिस्ट रिपब्लिक लेटिन अमेरिकी देश है। क्यूबा की राजधानी है हवाना। यही क्यूबा का सबसे बड़ा शहर भी है। दूसरा सबसे बड़ा शहर है सैंटियागो डे। इसके अलावा भी क्यूबा द्वीप, इस्लादीला जुवेतुद जैसे कई द्वीप समूह भी हैं। क्यूबा में अलग–अलग वक्त में दूसरे स्थानों से पहुंचे लोगों का असर यहां की कल्चर पर साफ नजर आता है। अब आपको बताते हैं एक रोचक बात। जैसे हमारे देश की समुद्री रास्ते की खोज क्रिस्टोफर कोलम्बस ने की थी वैसे ही 28 अक्टूबर 1492 में कोलम्बस ने ही क्यूबा की धरती पर कदम रखा था। तब कहीं जाकर दुनिया को क्यूबा के बारे में जानकारी मिली। जैसे हमारे भारत पर अंग्रेजों ने कब्जा कर लिया था वैसे ही अंग्रेजों ने 1762 में क्यूबा पर अधिकार कर लिया। इससे पहले क्यूबा पर स्पेन का अधिकार

साभार – www.countries-areas

था। इसके बाद अंग्रेजों और स्पेन के बीच फ्लोरिडा के बदले क्यूबा की अदला–बदली कर ली गई। आपने फिदेल कास्त्रो का नाम तो जरूर ही सुना होगा। फिदेल कास्त्रो के नेतृत्व में जब क्रांति हुई तो पहले से राज कर रहे तानाशाहों को उखाड़ फेंका गया। सिंगल कम्युनिस्ट पार्टी रूल स्थापित किया गया क्यूबा को कम्युनिज्म विचारधारा वाला देश माना जाता है। इसी कारण

साभार – www.ding.com

से कैपिटलिज्म वाले देश अमेरिका से इसकी हमेशा से दुश्मनी रही है। इस देश की सबसे बड़ी खासियत यह है कि इसकी लिटरेसी रेट यानी कि साक्षरता दर दुनिया में सर्वाधिक है। क्यूबा में 99.8 प्रतिशत लोग शिक्षित हैं। इतनी लिटरेसी रेट अमेरिका की भी नहीं है। है ना कमाल की बात ! क्यूबा के पड़ोसी देश हैती और जमैका है। आपको यह भी बतायें कि अमेरिका ने क्यूबा के ग्वांतानामो बे नेवल स्टेशन के 45 किलोमीटर लीज लिया हुआ है जिसके लिये प्रतिवर्ष चार हजार डॉलर का भुगतान करने की शर्त थी लेकिन क्यूबा ने अमेरिका से आज तक ये भुगतान स्वीकार नहीं किया है।

दोस्तों दुनिया भर में जंगल कम हो रहे हैं लेकिन क्यूबा दुनिया का एकमात्र ऐसा देश है जिसके पास पहले से ज्यादा जंगल हैं। क्यूबा की समुद्री सीमा 3500 किलोमीटर लम्बी है। क्यूबा के लोग नेचर को बहुत सम्मान देते हैं। कुछ स्पेसीज तो केवल क्यूबा में पाई जाती है। दो ईंच वाली दुनिया की सबसे खूबसूरत और कलरफुल बर्ड हमिंगबर्ड क्यूबा में पाई जाती है। यही नहीं आपके नाखून से भी छोटा दुनिया का सबसे नन्हा मैढक भी क्यूबा में ही पाया जाता है। क्यूबा का प्राकृतिक आवास पशु–पक्षियों के लिये स्वर्ग के समान है। अगर आप हवाई जहाज में हों और आसमान से क्यूबा को देखो तो क्यूबा का द्वीप एक मगरमच्छ जैसा नजर आता है। इसलिये इसे स्पेनिश भाषा में 'एल क्रोकोडिलो' या 'एल कैमा' के नाम से भी जाना जाता है। क्यूबा सिगार का घर माना जाता है। क्यूबा के सिगार

दुनिया के सबसे बेहतरीन सिगार माने जाते हैं। इन्हे घर में उगाये गये तम्बाकू से हाथ से बनाया जाता है। वैसे क्यूबा में गन्ना खूब होता है और यही क्यूबा की मुख्य फसल है। इसके कारण चीनी बनाने में क्यूबा दुनिया में शीर्ष देशों में गिना जाता है। चीनी के अलावा तम्बाकू और तांबा का निर्यात करने में क्यूबा अग्रणी देश रहा है। चुनावों की बात करें तो क्यूबा में चुनाव होने पर हर वोटर को वोट देना अनिवार्य होता है। यहां 'नोटा' का ऑप्शन नहीं होता। क्यूबा में रेडिया और टीवी का अधिकार केवल सरकार के पास होता है। क्यूबा इस मामले में भी दुनिया का इकलौता देश है जहां दो करेंसी है। एक करेंसी 'क्यूबन पैसो' का इस्तेमाल मूल निवासी करते हैं जबकि दूसरी करेंसी 'कनवर्टेबल पैसो' का उपयोग पर्यटक करते हैं। क्यूबा की आधिकारिक भाषा स्पेनिश है और क्यूबा के लोगों को 'क्यूबन' कहा जाता है। बेसबॉल क्यूबा का सर्वाधिक प्रसिद्ध खेल है। इसके साथ ही शतरंज खेल के प्रति भी जबरदस्त जुनून है। क्यूबा में 17 साल से 28 साल की उम्र के सभी पुरूष और महिलाओं को क्यूबा की सेना में 2 साल की सेवा देनी जरूरी होती है। क्यूबा का बैले नृत्य विश्व के सबसे बेहतरीन बैले नृत्य माने जाते हैं।

चलिये क्यूबा की कुछ और मजेदार बातें भी आपसे शेयर करते हैं। क्यूबा की अमेरिका से शत्रुता रहती है। इस कारण से क्यूबा में पेप्सी कोला को खरीदना और बेचना क्राईम माना जाता है। क्यूबा के लोगों के खानपान की कोई रेसिपी नहीं होती। यहां लोग पीढ़ी दर पीढ़ी अपने बच्चों को रेसिपी बता कर व्यंजन बनाना सिखाते रहते हैं। रोपा वियेजा क्यूबा की राष्ट्रीय डिश है। दुनिया में सबसे ज्यादा डॉक्टर्स क्यूबा में हैं। यानी हर 170 नागरिकों पर एक डॉक्टर। जो हमारे घरों में सीएफएल बल्ब होते हैं ना, क्यूबा में नहीं होते क्योंकि इसके स्वास्थ्य पर होने वाले नुकसान के कारण इन पर प्रतिबंध लगा हुआ है। आपने प्रसिद्ध साहित्यकार अर्नेस्ट हैमिंग्वे का नाम सुना होगा। हैमिंग्वे ने अपनी प्रसिद्ध रचनाएं क्यूबा में रहते हुए लिखी थी। तो दोस्तों ये थी क्यूबा की मजेदार सैर। पूरी उम्मीद है कि आपको अवश्य ही पसंद आई होगी। आपका जनरल नॉलेज भी बढ़ा होगा। यदि आपके दोस्तों के बीच कभी क्यूबा की चर्चा होगी तो आपके पास उनके साथ शेयर करने को बहुत सारा नॉलेज होगा। तो अगले अंक में हम करेंगे चहल, फिर करेंगे पहल और चहल–पहल करते हुए चलेंगे किसी और देश की यात्रा पर तब तक के लिये क्यूबा की स्पेनिश भाषा में 'चाउ–चाउ'। इसका मतलब है बाय–बाय।

पता – सूरसागर के पास, बीकानेर

फार्म हाउस

अर्चना त्यागी

परीक्षाएं समाप्त हुई तो नानी घर जाने की तैयारी शुरू हो गई। किटू और काजू दोनों की खुशी का ठिकाना नहीं था। कई सालों बाद दोनों बच्चों को नानी से मिलने का मौका जो मिल रहा था। नानी की गाय का दूध भी कितना टेस्टी होता है। दूध का गिलास हाथ में पकड़ते हुए किटू ने मम्मी से कहा।
अरे दूध को छोड़ो रोटी सब्जी कितनी टेस्टी होती है जो नानी चूल्हे में बनाती है। काजू को दूध पीना पसंद नहीं था इसलिए उसने खाने की याद दिलाई। सबसे ज्यादा मजा तो खेतों पर जाने में आता है। बैलगाड़ी में बैठकर और वो खेतों वाला स्विमिंग पुल। एकदम साफ पानी कोई भी बदबू नहीं होती है। बच्चे बात करते करते सब याद कर रहे थे जो उन्होंने नानी के घर में देखा था। ट्रेन में टिकट कन्फर्म हुई तो पैकिंग भी शुरू हो गई। किट्टू और काजू ने अपना अपना बैग ले लिया। बैग में अपना फेवरेट टैडी, डायरी, कलर बॉक्स और ड्रॉइंग बुक भी डाली। मम्मी से छुपाकर पुराना मोबाइल भी काजू ने रख लिया। ओह काजू, मम्मी को पता चला तो साथ में लेकर नहीं जाएगी। पापा के साथ दादी घर जाना पड़ेगा। किट्टू ने काजू को सचेत किया।

चित्र – माया शर्मा

ऐसा कुछ भी नहीं होगा अगर तू मम्मी को नहीं बताएगी तो। चुप करके बैठ जा नहीं तो मैं भी बता दूंगा कि तूने अपने बैग में डॉल हाउस डाला है। काजू की बात सुनकर किट्टू गुस्से से बोली, केवल डॉल ही ली है। डॉल हाउस कितना बड़ा है कुछ पता भी है ? मेरे छोटे से बैग में आ भी नहीं पाएगा।
बच्चों की आवाज़ सुनकर मम्मी अंदर आ

गई। दोनों नजरें झुका कर अपने अपने काम में लग गए। ट्रेन में बच्चों ने खूब मस्ती की। रास्ते में आने वाले बड़े–बड़े पेड़, खेत खलिहान, गांव और शहर सभी उनको रोमांचित कर रहे थे। स्टेशन पर पहले से ही नाना आए हुए थे उन सबको लेने के लिए। बच्चे हैरान थे यह देखकर कि अब गांव में भी ई रिक्शा चलने लगी थी। एक ई रिक्शा में बैठकर सब लोग घ ार पर आ गए।

आओ मेरे बच्चों, गले से लग जाओ। कितने साल बाद तुम्हे देख रही हूं। गोदी में बैठो। तुम्हारे लिए तुम्हारी पसंद की चीजें बनाई हैं। नानी थोड़ी बूढ़ी लग रही थी लेकिन उनकी आवाज़ में इतना दुलार था कि बच्चे सीधे उनसे आकर लिपट गए। काजू और किट्टू सफर से आए हो। भूल गए पहले मुंह हाथ धोना चाहिए। नानी के ऊपर भी कीटाणु छोड़ दोगे तुम लोग। मम्मी गुस्से से बोली पर बच्चों पर कोई असर नहीं हुआ।

चित्र – दिव्यांशी शर्मा

अपने नियम अपने शहर में ही लगा लेना तुम। यहां जितने दिन रहें खुलकर रहने दो बच्चों को। तुम जाकर नहा धो लो। पानी भर दिया था मैंने बाथरूम में। नानी ने मम्मी को बच्चों की ओर से जवाब दिया। मम्मी को बुरा तो लगा लेकिन विरोध नहीं कर पाई। चढ़ा लो इन्हे सिर पर। जब नाचेंगे तब मुझे ही याद करोगी। बात तो कभी समझनी नहीं है आपको। बेटी भी आई है इतने दिनों बाद। लेकिन नातियों के सामने दिखती कहां है...... बड़बड़ाते हुए मम्मी बाथरूम में चली गई। नानी बच्चों की पसंद का नाश्ता बनाने में जुट गई और नाना उन्हे बाहर लेकर आ गए।

नाना आपका घर तो एकदम बदल गया है। किट्टू ने सवाल किया। हां, मुझे भी लग रहा है। काजू ने किट्टू का समर्थन किया। हां, अब गांव में बिजली

आ गई है। हैंडपंप के बदले टंकी में पानी आता है। टीवी भी चलता है और रेडियो में एफएम भी चलता है। सबके घर में मोबाइल भी आ गया है। नानू खेत पर चलते हैं। मुझे गेंहू का खेत देखना है। और वो जो स्विमिंग पुल है ना उसमें नहाना है। काजू मचलने लगा। किट्टू नानू को देख रही थी कि नानू क्या जवाब देंगे।

बच्चों खेत अब उतना बड़ा नहीं रहा। सरकार ने आस पास के गांवों की जमीन खरीदकर हाईवे बनवा दिया है। अब तो एक छोटा सा खेत बचा है। उसमें सब्ज़ी उगाते हैं, गेंहू नहीं। ऐसा क्यों किया सरकार ने ? आपने उन्हे रोका क्यों नहीं ? बच्चों ने उतरे चेहरे से नानू से सवाल किया। हाईवे बढ़ते हुए ट्रैफिक को नियंत्रित करने के लिए बनाया। उसमें सबका फायदा है। हमारा गांव रोड़ के पास था इसलिए ऐसा हुआ। स्विमिंग पुल भी नहीं है अब ? किट्टू ने मासूमियत से पूछा। खेत में नहीं है, पर तुम लोगों के नहाने के लिए हमने घर के आंगन में ही एक हौद बनवाई है। उसमें पानी भर देते हैं। तुम लोग उसी में मस्ती करना। खूब नहाना गर्मी में। बच्चों के चेहरे खिल गए। गांव अब बदल गया था। नानी का घर भी बदल गया था। शहरों के जैसी सुविधाएं थी। पंखे, कूलर चल रहे थे। टीवी और मोबाइल भी थे लेकिन एक बात जो नहीं बदली थी वह थी वहां का शांत वातावरण। अपणायत और आवभगत। नानू की चौपाल अब भी सजती थी। अखबार की खबरों पर चर्चा होती। यू ट्यूब की वीडियो देखी जाती खूब हंसी ठिठोली होती। नानी भी दोपहर में टीवी देखती पर पड़ोस वाली औरतों के साथ बैठकर। खूब बातें होती। साथ में चाय भी पीते और पकौड़े भी खाते।

नानी का घर अब भी रौनक से आबाद था। शहरों के घरों की तरह वीरान नहीं था। घरों में वाहन थे लेकिन रोड़ पर जाम नहीं था। घर अब फार्म हाउस जैसा था लेकिन महक वही गांव वाली थी। किट्टू और काजू अब भी वहां आकर शहर नहीं जाना चाहते थे।

पता –ओम विहार, रुड़की, उत्तराखंड

जाने आकाश के बारे में

संजय श्रीमाली

प्यारे बच्चों, प्रतिमाह आपको तारों, ग्रहों एवं अलग–अलग खगोलिय घटनाओं से अवगत करवाया जाता है। आपको यह जानकारी अच्छी लगती होगी। हमारा अंतरिक्ष अनंत विस्तार लिए हुए, जिसमें बहुत सारी खगोलिय घटनाएं नियमित होती रहती हैं। कुछ घटनाएं मासिक होती है, और कुछ घटनाएं विशेष दिवसों पर घटित होती है। मासिक खगोलिय घटना से तात्पर्य है कि वह प्रतिमाह हमे देखने को मिलेगी। इस माह के आरम्भ में हमें पूर्णिमा का पूर्ण चन्द्रमा देखने को मिलेगा।

साभार www.mpanchang.com

दिनांक 11 जून 2025 को पूर्णिमा हैं। इस दिन चंद्रमा पृथ्वी के विपरीत दिशा में स्थित होगा क्योंकि सूर्य और उसका चेहरा पूरी तरह से प्रकाशित होगा। यह चरण 07:45 यूटीसी पर होता है। इस पूर्णिमा को प्रारंभिक अमेरिकी जनजातियों द्वारा स्ट्रॉबेरी मून के रूप में जाना जाता था क्योंकि यह पकने वाले फलों को इकट्ठा करने के लिए वर्ष के समय का संकेत देता था। यह स्ट्रॉबेरी की कटाई के मौसम के चरम के साथ भी मेल खाता है। इस चंद्रमा को रोज़ मून और हनी मून के नाम से भी जाना जाता है।

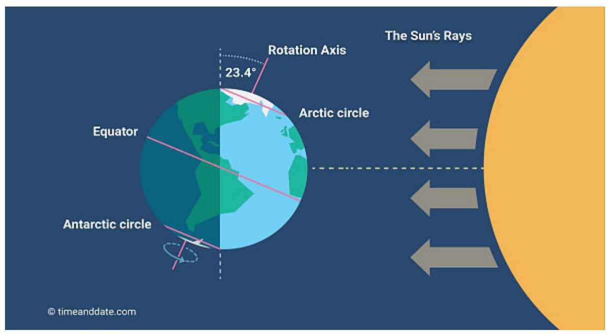

साभार www.timeanddate.com

अब आपको जानकारी देते है। वर्ष में होने वाली संक्राति के बारे में। उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रूवों पर होने वाले बदलावों के बारे में में।

दिनांक 21 जून 2025 को जून

संक्रांति होगी। जून संक्रांति 02:40 यूटीसी पर होती है। पृथ्वी का उत्तरी ध्रूव सूर्य की ओर झुका होगा, जो आकाश में अपनी सबसे उत्तरी स्थिति पर पहुंच जाएगा और 23.44 डिग्री उत्तरी अक्षांश पर सीधे कर्क रेखा के ऊपर होगा। यह उत्तरी गोलार्ध में गर्मी का पहला दिन (ग्रीष्म संक्रांति) और दक्षिणी गोलार्ध में सर्दी का पहला दिन (शीतकालीन संक्रांति) है।

जैसा कि आपको मैंने पहले भी बताया था कि माह में एक दिन पूर्णिमा होती है तथा उसके 15 दिन बाद अमावस्या। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा पूरा होता है एवं अमावस्या के दिन आसमान में चन्द्रमा दिखाई नहीं देता है।

इस माह 25 जून 2025 को अमावस्या है। इस दिन चंद्रमा पृथ्वी के सूर्य के समान ही स्थित होगा और रात के आकाश में दिखाई नहीं देगा। यह चरण 10:33 यूटीसी पर होता है। आकाशगंगाओं और तारा समूहों जैसी धुंधली वस्तुओं का निरीक्षण करने के लिए यह महीने का सबसे अच्छा समय है क्योंकि इसमें हस्तक्षेप करने के लिए चांदनी नहीं होती है। इस दिन आपको अन्य दिनों से काला गहरा आकाश दिखाई देगा। आप शहर से दूर जहां लाईट न हो वहां से आकाश का निरक्षण करेगें तो आप आसानी से आकाश में अनगिनत तारे, ग्रह, आकाशगंगाएं आदि देख सकते हैं। यह नजारा आपके लिए बहुत ही रोचक रहेगा।

आकाश में ग्रहों की स्थिति
(8 जून 2025)

ग्रह	उदय	अस्त	मध्याहन	स्थिति
बुध	6:21	20:26	13:24	दुर्बल
शुक्र	03:08	15:56	09:32	अच्छा
मंगल	10:45	23:52	17:19	अच्छा
गुरू	06:32	20:22	13:27	दुर्बल
शनि	01:38	13:34	07:36	सामान्य
यूरेनस	04:29	18:00	11:14	दुर्बल
नेपच्यून	01:38	13:39	07:39	दुर्बल

अजित फाउण्डेशन

प्रिय सदस्यों

आपको 'चहल-पहल' पढ़कर अच्छा लगा होगा। 'चहल-पहल' के पिछले अंको को पढ़ने हेतु आप अजित फाण्डेशन की वेब साईट https://ajitfoundation.net पर जाकर डाउनलोड कर सकते हैं। साथ ही अजित फाउण्डेशन पुस्तकालय में उपलब्ध पुस्तकों की सूचि https://www.libib.com/library लिंक पर देख सकते है और युवाओं के लिए होने वाली मासिक गतिविधियों की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

संस्था के सामुदायिक पुस्तकालय में पुस्तकें पढ़ने के साथ-साथ खिलौने, पेन्टिग एवं अन्य रोचक गतिविधयों में भाग ले सकते है। इससे आपको बहुत कुछ नया सीखने को मिलेगा।

पुस्तकालय का समय - दोपहर: 12:00 से सायं 7:00 बजे तक है।

हमारा पता – अजित फाउण्डेशन

आचार्यों की ढाल, सेवगों की गली, बीकानेर। मो. 7014198275 9509867486

अपनी रचनाएं ईमेल पर ही भेजे chahalpahalnew@gmail.com